IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नवीन परियोजनाओं के लिए वित्तीय योजना और बजट निर्धारण की प्रक्रिया

नरेश कुमार मालव

सहायक आचार्य ABST

श्री श्रद्धानाथ पी.जी. महाविद्यालय गुडागौड़जी (झुंझुनूं)

शोध सारांश

परियोजना प्रबंधन के क्षेत्र में वित्तीय नियोजन और बजट निर्धारण की महत्वता और उनके प्रभावी कार्यान्वयन की प्रक्रिया को समझाने का प्रयास करता है। यह अध्ययन विभिन्न चरणों में वित्तीय योजना तैयार करने, बजट निर्धारित करने और इनका निगरानी तथा नियंत्रण कैसे किया जाता है, इस पर आधारित है। शोध में परियोजना के प्रारंभ से लेकर उसके समापन तक वित्तीय प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं को विस्तृत रूप से विश्लेषित किया गया है। इसमें बजट बनाने की प्रक्रिया, प्रारंभिक लागतों का अनुमान, वित्तीय संसाधनों का प्रबंधन, और लाभ तथा जोखिम का आकलन शामिल है। परियोजना की दौरान बजट की निगरानी और संभावित अनियमितताओं को सुधारने के उपायों पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। नवीन परियोजनाओं में वित्तीय योजना में सुधार की प्रक्रिया कैसे निरंतर चलती रहती है और परियोजना के विकास के साथ–साथ इसे कैसे अद्यतन किया जाता है। इसके साथ ही, परियोजना के जोखिमों का मूल्यांकन और उन पर नियंत्रण के लिए उपयुक्त रणनीतियों का सुझाव भी दिया गया है। किसी भी परियोजना के सफल संचालन और उसे समय पर पूरा करने के लिए वित्तीय प्रबंधन का उचित रूप से करना अत्यंत आवश्यक है।

शब्द कुंजी :– परियोजना, परियोजना, बजट, वित्तीय संसाधन, मानव संसाधन, सामग्री, उपकरण, तकनीकी संसाधन।

प्रस्तावना

परियोजना प्रबंधन एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें विभिन्न कारकों का समन्वय करना आवश्यक होता है। किसी भी परियोजना की सफलता या विफलता कई कारकों पर निर्भर करती है, जिसमें प्रमुख भूमिका वित्तीय योजना और बजट निर्धारण की होती है। विशेष रूप से नवीन परियोजनाओं के संदर्भ में, जहाँ सीमित संसाधनों और उच्च जोखिम के बीच कार्य करना पड़ता है, वहाँ वित्तीय प्रबंधन की प्रक्रिया अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाती है। नवीन परियोजनाओं के लिए वित्तीय योजना और बजट निर्धारण न केवल परियोजना के शुरूआत से पहले आवश्यक है, बल्कि इसे पूरे परियोजना के जीवनचक्र में समय–समय पर अद्यतन और निगरानी भी करनी

होती है। यह वित्तीय नियंत्रण परियोजना के विभिन्न पहलुओं को व्यवस्थित करने में मदद करता है, जैसे कि लागत, समय, गुणवत्ता और जोखिम प्रबंधन। बिना प्रभावी वित्तीय योजना और बजट के, कोई भी परियोजना अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में असफल हो सकती है और उससे जुड़ी वित्तीय असमानताएँ परियोजना की सफलता को प्रभावित कर सकती हैं।

शोध के उद्देश्य

- नवीन परियोजनाओं के लिए वित्तीय योजना और बजट निर्धारण की प्रक्रिया का अध्ययन करना।
- वित्तीय योजना और बजट निर्धारण प्रक्रिया परियोजना का अध्ययन करना।
- नवीन परियोजनाओं के लिए वित्तीय योजना और बजट निर्धारण के उद्देश्य व प्रतिवेदनों का अध्ययन करना।

परियोजना का अर्थ

परियोजना शब्द का अर्थ श्योजनाबद्ध कार्य हैं। सरल शब्दों में किसी भी कार्य को करने से पूर्व उस कार्य की योजना तैयार करने एवं योजना के अनुरूप कार्य सम्पन्न करने की प्रतिबद्धता को परियोजना कहते है। सामान्यतः व्यवहार में अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर ऐसी परियोजनाएँ देखी जा सकती हैं। परियोजनाएँ अल्पकालीन उद्देश्यों एवं/अथवा दीर्घकालीन उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु तैयार की जाती हैं। राजनैतिक संगठनों, सामाजिक संगठनों, शैक्षणिक संगठनों, श्रम संगठनों, धार्मिक संगठनों एवं व्यावसायिक संगठनों की परियोजनाओं के उद्देश्य, पृथक–पृथक होते हैं। विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, संयुक्त राष्ट्र संघ की परियोजनाओं के उद्देश्य एवं विभिन्न राष्ट्रों की सरकारों की परियोजनाओं के उद्देश्यों में समानता होना आवश्यक नहीं है। प्रत्येक संगठन अपने तात्कालिक एवं सामरिक हित के अनुरूप परियोजना तैयार करता है। जहाँ व्यावसायिक संस्थाएँ अपने व्यावसायिक हितों के अनुरू परियोजनाओं का चयन करती हैं वहाँ सरकार अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप परियोजनाओं का चयन करती है।

बजट निर्धारण की प्रक्रिया

बजट निर्धारण एक संरचित और व्यवस्थित प्रक्रिया है, जो किसी परियोजना, संगठन या गतिविधि के लिए वित्तीय संसाधनों का प्रबंधन करने का कार्य करती है। यह सुनिश्चित करता है कि सभी गतिविधियाँ निर्धारित वित्तीय सीमा के भीतर पूरी हों। निम्नलिखित चरणों में बजट निर्धारण की प्रक्रिया की व्याख्या की जा सकती है।

उद्देश्यों और लक्ष्यों का निर्धारण

पहले, परियोजना या संगठन के उद्देश्यों और लक्ष्यों का स्पष्ट रूप से निर्धारण किया जाता है। बजट का निर्धारण इस बात पर निर्भर करेगा कि परियोजना के क्या उद्देश्य हैं और उन्हें किस प्रकार से पूरा किया जाएगा।यह चरण बजट के प्राथमिक आधार को स्थापित करता है, जैसे कि क्या खर्च करना है, कब खर्च करना है और क्यों खर्च करना है।

आवश्यक संसाधनों का निर्धारण

परियोजना को पूरा करने के लिए आवश्यक सभी संसाधनों की पहचान की जाती है। इसमें मानव संसाधन, सामग्री, उपकरण, तकनीकी संसाधन, आदि शामिल होते हैं। इसके बाद, इन संसाधनों की लागत का अनुमान लगाया जाता है।

लागत का अनुमान

प्रत्येक गतिविधि, संसाधन और सेवा की लागत का अनुमान लगाया जाता है। इसे प्राथमिक लागत विश्लेषण कहते हैं। इसमें श्रमिकों की मजदूरी, सामग्री की लागत, उपकरणों का खर्च, परिवहन, प्रशासनिक शुल्क, और अप्रत्याशित खर्चों की भी गणना की जाती है। इस चरण में, ऐतिहासिक डेटा और बाजार दरों का उपयोग किया जा सकता है।

राजस्व का आकलन

यदि परियोजना किसी राजस्व उत्पन्न करने वाली गतिविधि से जुड़ी है (जैसे व्यवसाय या उत्पादन परियोजना), तो अनुमानित आय का आकलन भी किया जाता है। इस चरण में, बिक्री, सेवा शुल्क, निवेश आय आदि के रूप में संभावित राजस्व की भविष्यवाणी की जाती है।

संकलन और समायोजन

सभी अनुमानित खर्चों और राजस्व का एकत्रीकरण किया जाता है। यदि प्रारंभिक बजट अनुमानित राशि से अधिक है, तो कुछ संसाधनों को पुनः व्यवस्थित या पुनः प्राथमिकता दी जाती है ताकि बजट को संतुलित किया जा सके।

वित्तीय स्रोतों का निर्धारण

बजट को पूरा करने के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधनों की पहचान की जाती है, जैसे कि आंतरिक पूंजी, बाहरी निवेश, ऋण, या सरकारी फंडिंग। इसके बाद, वित्तीय संसाधनों के प्रवाह और इनका उपयोग तय किया जाता है।

जोखिम का आकलन

परियोजना के दौरान उत्पन्न होने वाले वित्तीय जोखिमों की पहचान की जाती है, जैसे कि मुद्रास्फीति, ब्याज दरों में बदलाव, या अप्रत्याशित लागतें। जोखिमों के लिए एक बैकअप योजना तैयार की जाती है और उस पर खर्च करने के लिए अतिरिक्त निधि निर्धारित की जाती है।

बजट का अनुमोदन

एक बार बजट तैयार हो जाने के बाद, उसे संबंधित अधिकारियों या प्रबंधकों से अनुमोदन प्राप्त किया जाता है। यदि बजट बहुत अधिक है या उचित नहीं लगता, तो इसे पुनः संशोधित किया जाता है।

वित्तीय रिपोर्टिंग और मूल्यांकन

बजट के कार्यान्वयन के दौरान और उसके बाद वित्तीय रिपोर्ट तैयार की जाती है, जो यह दर्शाती है कि बजट का पालन किस हद तक किया गया और कोई अनियमितताएँ तो नहीं हुईं। इस रिपोर्ट के आधार पर, अगले बजट निर्धारण की प्रक्रिया में सुधार किया जा सकता है। इस प्रकार, बजट निर्धारण की प्रक्रिया एक

निरंतर प्रक्रिया है, जिसमें हर चरण के दौरान निगरानी और समायोजन की आवश्यकता होती है। यह परियोजना या संगठन के वित्तीय स्थिरता और सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

परियोजना के उद्देश्य

किसी व्यावसायिक संस्था के प्रबन्धकों का मूलभूत उद्देश्य व्यावसायिक संस्था में किये गये विनियोजन पर अधिकतम प्रत्याय प्राप्त करना होता है। एक व्यवसायिक संस्था के प्रबन्धकों योजना नियोजन परियोजना का प्रथम चरण उसका नियोजन करना है। पूंजीगत परियोजना के इस चरण का सम्बन्ध प्रस्तावित विशिष्ट विनियोजन व्यूहरचना की अभिव्यक्ति करना तथा परियोजना प्रस्ताव की प्रथमदृष्टया अच्छाई बुराई, गुण–अवगुण, लाभ–हानि का आभास करना है। परियोजना नियोजन के अन्तर्गत मोटे रूप से परियोजना के क्षेत्रों/ प्रकारों में विनियोग तथा स्वरूप की रूपरेखा की अभिव्यक्ति होती है। परियोजना की प्रारम्भिक अभिव्यक्ति से दो उद्देश्यों का मोटे रूप से मूल्यांकन होता है, क्या प्रथम दृष्ट्या परियोजना में विनियोग करना लाभप्रद रहेगा, जो कि परियोजना की सम्पूर्ण उपादेयता की विस्तृत जांच–पड़ताल की सार्थकता के निर्णय का आधार होगा, तथा परियोजना के उन पहलुओं का आभास होगा जिनकी विशेषतः गहन जाँच–पड़ताल करने की आवश्यकता होगी ।

परियोजना प्रतिवेदन

परियोजना से सम्बन्धित आवश्यक सूचनाओं एवं उनके विश्लेषण से ज्ञात हुए तथ्यों का विवरण परियोजना प्रतिवेदन कहलाता है। प्रत्येक परियोजना के सम्बन्ध में निर्णय लेते समय परियोजना प्रतिवेदन में शामिल तथ्य आधार होते हैं। परियोजना प्रतिवेदन तैयार करने से पूर्व अनेक कार्य करने होते हैं जिन पर समय, श्रम एवं धन व्यय करना पड़ता है। परियोजना प्रतिवेदन तैयार करने की लागत को परियोजना–पूर्व का व्यय माना जाता है क्योंकि यह व्यय परियोजना लागत का भाग नहीं होता है। परियोजना प्रतिवेदन विस्तृत एवं गहन अनुसंधान से प्राप्त तथ्यों को एकत्रित, सूचीबद्ध, विश्लेषित एवं परस्पर सम्बन्धित कर तैयार किया जाता है।

परियोजना प्रतिवेदन तैयार करने से पूर्व कार्य

परियोजना प्रतिवेदन तैयार करने से पूर्व परियोजना से जुड़े हुए निम्न पहलुओं से सम्बन्धित सूचनाओं का संग्रहण एवं विश्लेषण करना होता है :–

- ❖ बाजार एवं मांग विश्लेषण
- ❖ तकनीकी विश्लेषण
- ❖ वित्तीय/अनुमान / प्रक्षेपण
- ❖ आर्थिक/सामाजिक लागत–लाभ विश्लेषण

बाजार एवं माँग विश्लेषणः बाजार एवं माँग विश्लेषण से तात्पर्य है. (1) उत्पाद/ सेवा की कुल बाजार माँग का अनुमान लगाना, तथा (पप) कुल बाजार माँग में व्यवसायिक संस्था के संभावित अंश का अनुमान लगाना। बाजार में उत्पाद/ सेवा की मांग से सम्बन्धित तथ्यों से ही व्यवसायिक संस्था को अपनी परियोजना की सफलता एवं असफलता का आभास होता है। बाजार मांग की सूचना ग्राहकों से प्रत्यक्ष जानकारी, प्रतियोगी संस्थाओं के विक्रय समंक, मध्यस्थों से सम्पर्क एवं उद्योग व्यापार संघों द्वारा परिकलित / अनुमानित मांग के आधार पर की जाती है। इन सूचनाओं के विश्लेषण के आधार पर बाजार मांग में व्यवसायिक संस्था के उत्पाद/सेवा का हिस्सा अनुमानित किया जाता है।

तकनीकी विश्लेषणः तकनीकी विश्लेषण का उद्देश्य दो तथ्यों से सन्तुष्ट होना है :–परियोजना के लिये आवश्यक संसाधन यथा सामग्री, ईधन, रसायन, श्रम आदि उपलब्ध हैं। परियोजना हेतु तकनीकी आवश्यकताएँ अर्थात् सरकारी नीतियाँ, संयन्त्र एवं मशीनरी, उत्पादन तकनीक, पेटेन्ट/तकनीकी सहयोग की उपलब्धता/संभावना, पर्यावरण, परियोजना प्रारम्भ करने की वैधानिक समय सीमा आदि सम्बन्धी संभावनाएँ उपलब्ध है अथवा नहीं। इसके साथ ही यह भी जानकारी करना आवश्यक है कि विद्यमान परियोजनाओं, उत्पादों, समझौतों पर इस परियोजना का क्या प्रभाव पड़ेगा।

परियोजना प्रतिवेदन का प्रारूप

परियोजना प्रतिवेदन का कोई निर्धारित प्रारूप नहीं है परन्तु सामान्यतः परियोजना प्रतिवेदन की निम्न विषय वस्तु होती है

- परियोजना से सम्बन्धित उद्योग, अर्थव्यवस्था में उस उद्योग का महत्व, विद्रद्यमान व्यवसायिक इकाइयों की उत्पादन क्षमता, बाजार मांग, परियोजना के लिये व्यवसायिक संस्था की अनुजा–पत्र के अनुसार स्वीकृत (स्पबमदेमक) क्षमता, सरकारी नीति, निर्यात संभावनाएँ आदि का विवेचन होता है।
- आगामी 5 वर्षों में परियोजना के उत्पाद/ सेवा की मांग एवं पूर्ति का आकलन दिया होता है। परियोजना के उत्पाद/सेवा के लिये कच्ची सामग्री की उपलब्धता की जानकारी प्रत्येक कच्ची सामग्री के लिये दी जाती है। परियोजना के उत्पाद/सेवा हेतु विभिन्न उत्पादन प्रक्रियाओं आदि का विवरण । तकनीक एवं तकनीशियों की आवश्यकता एवं उपलब्धता का आकलन।
- योजना स्थल का विवरण एवं उस स्थल पर परियोजना लगाने के तुलनात्मक लागत लाभदायकता का विवरण।
- परियोजना के लिये चयनित संयन्त्र, मशीनरी एवं उपकरणों की क्षमता।
- परियोजना के लिए शक्ति, जल, परिवहन, संचार, बैंक, बीमा, मरम्मत आदि की सुविधाओं का विवरण।
- अवशिष्ट उत्पादों के निष्पादन की व्यवस्था।
- परियोजना के लिये भूमि, भवन, संयन्त्र एवं मशीनरी को प्राप्त एवं स्थापित करने की समयबद्ध योजना।
- परियोजना की लागत भूमि की लागत भवन निर्माण/क्रय की लागत संयन्त्र एवं मशीनरी की लागत उपकरण, वाहन आदि की लागत।
- परियोजना हेतु अनुज्ञा प्राप्त करने कानूनी समझौते करने, आवश्यक वित्त व्यवस्था करने सम्बन्धी व्यय।
- वित्त व्यवस्था की पूंजी लागत।
- सर्वोत्तम उत्पादन क्षमता एवं उसे प्राप्त करने की समयावधि।
- उत्पाद एवं मूल्य लागत।
- परियोजना के प्रथम पांच वर्षों का रोकड़ प्रवाह विवरण।
- तकनीकी एवं वित्तीय संभाव्यता का विस्तृत विवेचन।
- परियोजना के लिये आवश्यक तकनीकी एवं कुशल पेशेवर व्यक्तियों एवं प्रबन्धको के स्तर, अनुभव एवं गत सफलताओं का विवेचन।

निष्कर्ष

शोध पत्र में नवीन परियोजनाओं के लिए वित्तीय योजना और बजट निर्धारण की प्रक्रिया का गहन अध्ययन किया गया। परियोजना की सफलता के लिए वित्तीय प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण है, और इसमें वित्तीय योजना और बजट निर्धारण की प्रक्रियाएँ केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। नवीन परियोजनाओं के लिए वित्तीय योजना का निर्धारण एक महत्वपूर्ण कदम है, क्योंकि यह परियोजना के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक संसाधनों और खर्चों का उचित निर्धारण करता है। प्रारंभिक लागतों का सही आकलन, संभावित राजस्व का मूल्यांकन, और विभिन्न जोखिमों का प्रबंधन यह सुनिश्चित करता है कि परियोजना समय पर और बजट के भीतर पूरी हो सके। बजट निर्धारण की प्रक्रिया में वित्तीय नियंत्रण और निगरानी का होना आवश्यक है, ताकि परियोजना के दौरान किसी भी अनियमितता का त्वरित समाधान किया जा सके। यह शोध यह भी दर्शाता है कि परियोजना के विभिन्न चरणों में बजट को अद्यतन और पुनः संशोधित करना चाहिए, ताकि परियोजना का वित्तीय प्रबंधन समुचित रूप से किया जा सके और किसी भी वित्तीय संकट से बचा जा सके। इसके अतिरिक्त, जोखिम प्रबंधन और वित्तीय असंतुलन को नियंत्रित करने के लिए विभिन्न उपकरणों और रणनीतियों का उपयोग आवश्यक है। परियोजना के दौरान उत्पन्न होने वाले वित्तीय संकटों का सामना करने के लिए सही समय पर निर्णय लेना और उचित सुधारात्मक कदम उठाना परियोजना की सफलता की कुंजी है। इसके बिना, किसी भी परियोजना का समय पर और निर्धारित बजट के भीतर पूरा होना अत्यधिक चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इसलिए, परियोजना प्रबंधकों और वित्तीय विशेषज्ञों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर परियोजना में वित्तीय योजना और बजट निर्धारण की प्रक्रिया ठीक से लागू की जाए, ताकि परियोजना अपने उद्देश्यों को पूरा कर सके और सफलता प्राप्त कर सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. केर्ज़नर, हैरोल्ड. (2013) परियोजना प्रबंधन योजना, अनुसूची निर्धारण और नियंत्रण के लिए एक प्रणालीगत दृष्टिकोण' विली।
2. मोहन्टी, आर. पी. (2016) 'परियोजना प्रबंधन सिद्धांत और प्रथाएँ' पियरसन।
3. मरेदीथ, जैक आर., और सैमुअल जे. मंटेल. 2014 'परियोजना प्रबंधन एक प्रबंधकीय दृष्टिकोण' विली।
4. फ्राइक्सेल, डेल ई. (2015) 'परियोजना प्रबंधन का अभ्यास'. प्रोजेक्ट मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट।
5. सेठी, विजय आर. (2015) 'इंजीनियरों के लिए लागत और वित्तीय प्रबंधन' विली इंडिया।
6. जलोटे, पंकज (2014) 'परियोजना प्रबंधन योजना और नियंत्रण तकनीक' विली इंडिया।
7. प्रोजेक्ट मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट (2017) 'प्रोजेक्ट मैनेजमेंट बॉडी ऑफ नॉलेज', 6वां संस्करण।
8. लूज़मोर, मार्टिन (2018) 'परियोजना जोखिम का प्रबंधन' राउटलेज।
9. गोपालकृष्णन, पी., और वी. वी. श्रीनिवासन (2017) 'परियोजना प्रबंधन रणनीतिक वित्तीय योजना और लागत प्रबंधन' टाटा मैक्ग्रॉ हिल।
10. दवे बी. एल. (2010) वित्तिय प्रबंध, व.मा.कोटा वि.वि., कोटा, राजस्थान।